आचार्य रामसेन

जीवन-परिचय : आचार्य रामसेन ने अपना संक्षिप्त परिचय गुरुओं के नामोल्लेख के साथ दिया है। उन्होंने अपने विद्यागुरु और दीक्षागुरु का निर्देश इस प्रकार किया है कि वीरचन्द्र, शुभदेव, महेन्द्रदेव और विजयदेव विद्यागुरु हैं तथा नागसेन दीक्षागुरु हैं। रामसेन सेनगण के आचार्य हैं। आचार्य रामसेन का समय ई. सन् की 11वीं शताब्दी का उत्तरार्ध है। उनके समय की सिद्धि उनके गुरु नागसेन के समय से भी हो जाती है।

रचना-परिचय : आचार्य रामसेन का समय ई. सन् की 11वीं शताब्दी का उत्तरार्ध है। उनके समय की सिद्धि उनके गुरु नागसेन के समय से भी हो जाती है।

1. तत्त्वानुशासन : रामसेन द्वारा रचित ग्रन्थ तत्त्वानुशासन 258 संस्कृत पद्यों की महत्त्वपूर्ण रचना है। इसमें अध्यात्म विषय का सुन्दर प्रतिपादन है। यह भाषा और विषय दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है।

ग्रन्थकार ने अध्यात्म जैसे नीरस और कठोर विषय को सरल एवं सुगम बना दिया है। कर्मबन्ध के कारण मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को हेय और दुख का हेतु बतलाया है और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को उपादेय और सुख का कारण बतलाया है।